

वृहस्पतविर व्रत की आरती  
जय जय आरती राम तुम्हारी । राम दयालु भक्त हतिकारी ॥  
जनहति प्रगटे हरिव्रतधारी । जन प्रहलाद प्रतजिजा पारी ॥  
दुरुपदसुता को चीर बढ़ायो । गज के काज पयादे धायो ॥  
दस सरि छेदबीस भुज तोरे । तैतीसकोटिदेव बंदी छोरे ॥  
छत्र लिए सर लक्ष्मण भ्राता । आरती करत कौशल्या माता ॥  
शुक शारद नारदमुनि ध्यावै । भरत शत्रुघन चँवर दुरावै ॥  
राम के चरण गहे महावीरा । ध्रुव प्रहलाद बालसुर वीरा ॥  
लंका जीता अवध हरि आए । सब संतन मलिमंगल गाए ॥  
सीय सहति सहिसन बैठे । रामा । सभी भक्तजन करें प्रणामा ॥